हिन्दी पाठ- ४

मातृभाषा - हिन्दी

कक्षा - ४

सर्वशिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

शिक्षक शिक्षा निदेशालय और
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण,
भुवनेश्वर

हिन्दी पाठ - ४

मातृभाषा - हिन्दी

कक्षा - ४

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति :

प्रो. डॉ. राधाकान्त मिश्र, अध्यक्ष

डॉ. स्मरप्रिया मिश्र, प्रभारी

डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र

डॉ. स्नेहलता दास

श्री आशीष कुमार राय

डा: सौदामिनी मिश्र

डा: लक्ष्मीधर दाश

डा: अजित प्रसाद महापात्र

श्री सुरथ बेहेरा

संयोजिका

डॉ. नन्दिता मिश्र

श्रीमती अनुपमा नन्द

डॉ. तिलोत्तमा सेनापति

प्रकाशक

विद्यालय और गणशिक्षा विभाग, ओड़िशा सरकार

संस्करण - २०१०

२०१७

मुद्रण : पाठ्यपुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

प्रस्तुति :

शिक्षक शिक्षा निदेशालय और

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,

ओड़िशा, भुवनेश्वर

आइए, ऐसा करें

इस नए पाठ्यक्रम में कई तब्दिलियाँ की गई हैं। पहली है दृष्टिकोण में भिन्नता। अब शिक्षक शिक्षा प्रदान करने की तुलना में विद्यार्थी द्वारा स्वयं सीखने के प्रयास पर जोर दें। भाषण कम करें। विद्यार्थियों को बोलने का मौका दें। उदाहरणार्थ–स्वयं गद्य / पद्य का आदर्श वाचन कर दें, फिर विद्यार्थियों द्वारा उस कार्य को कराएँ। लेखन-शैली बता दें, फिर लिखवाएँ। वाद-विवाद, तर्कसभा, नाटकीय संवाद आदि अधिक, करवाए। लघु निबंध, छोटे-छोटे अनुच्छेद-लेखन, पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी दफ्तरों में प्रचलित पत्रों आदि पर अभ्यास कराए जाएँ।

दूसरी बात है–भाषा-शिक्षण पर अधिक बल देना है। इसलिए हर पाठ के उपरांत लंबी अनुशीलनियाँ दी गई हैं। उनके आधार पर शिक्षक अपनी तरफ से भी नई प्रश्न-शैलियों का प्रयोग कर सकते हैं और विद्यार्थियों द्वारा अभ्यास करवा सकते हैं। फिर साहित्य पर ध्यान दें । इससे बच्चों की रुचि परिमार्जित होती है और मानवीय - वृत्तियों का पोषण-पल्लवन होता है।

तीसरी बात है- मूल्यांकन-शैली में परिवर्तन। विद्यार्थियों के मस्तिष्क से परीक्षा का भय दूर किया जाए। पाठ को रटने की अपेक्षा सृजनात्मक, व्यक्तिगत लेखन अधिक महत्व रखता है। साल में दो-एक परीक्षा के महत्व को कम करके तात्कलिक / सावधिक परीक्षाएँ अधिक संख्या में हों। सबका मूल्यांकन अंतिम परिणाम में प्रतिफलित हो।

शिक्षकों से अनुरोध है कि वे पाठ्यपुस्तक को पहले देख लें, इसके दृष्टिकोण, कर्म, कार्य-शैली का अनुध्यान करके अपनी शिक्षा-शैली बनाएँ। शिक्षक तथा विद्यार्थियों की सक्रियता से भाषा- शिक्षण सरस होता है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा है। इसे सीखना प्रत्येक नागरिक का सांविधानिक कर्तव्य है। यह सारे देश के जन-जन में योगसूत्र स्थापित करने की भाषा है। इसे सीखने में रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि आधुनिक माध्यमों का भी उपयोग किया जाए। क्योंकि ये शिक्षण के सरल और सशक्त साधन हैं। यह पाठ्यपुस्तक इन सभी का आधार प्रस्तुत करती है।

शिक्षकों, अभिभावकों के सहयोग और साधनों के उपयोग से हिन्दी भाषा का अध्ययन काफी सरस हो सकता है।

विषय-सूची

क.सं.	विषय	पृष्ठ
१.	संदेश (कविता)	१
२.	कबीर-रहीम (कविता)	५
३.	घड़ाभर बुद्धि (कहानी)	९
४.	यह जुगनू है (कविता)	१४
५.	शेरे पंजाब (लेख)	१८
६.	साथी हाथ बढ़ाना (कविता)	२३
७.	बचत का महत्व (एकांकी)	२७
८.	प्यार का त्यौहार (निबन्ध)	३३
९.	पहेलियाँ (केवल पढ़ने के लिए)	३८
१०.	वृक्ष लगाओ (कविता)	३९
११.	बस की यात्रा	५३
१२.	माँ कह एक कहानी (कविता)	५०
१३.	पर्यटन (यात्रा वृतान्त)	५५
१४.	खिलौनेवाला (कविता)	६१
१५.	गंगा नदी (केवल पढ़ने के लिए)	६६
१६.	वीर की वसीयत (कविता)	६९
१७.	पत्र लेखन	७३
१८.	जय जवान जय किसान (कविता)	७५